पाठ 8: रामवृक्ष बेनीपुरी (बालगोबिन भगत)

पाठ का सार (Summary):
बालगोबिन भगत एक सीधे-सादे गृहस्थ थे जो कबीरदास जी को अपना 'साहब' मानते थे और उन्हीं के आदर्शों पर चलते थे। वे खेती-बाड़ी करते थे और खेत में जो भी पैदावार होती, उसे पहले कबीर के मठ (दरबार) में ले जाकर चढ़ा देते। वहाँ से 'प्रसाद' के रूप में जो बचकर मिलता, उसी से अपना जीवन चलाते। उनका स्वर अत्यंत मधुर था और वे हमेशा कबीर के पद गाते रहते थे। जब उनके इकलौते बेटे की मृत्यु हुई, तो वे रोने के बजाय कबीर के गीत गा रहे थे और अपनी पुत्रवधू (बहू) को भी उत्सव मनाने के लिए कह रहे थे, क्योंकि उनके अनुसार आत्मा परमात्मा से मिल गई थी। उन्होंने समाज की परवाह न करते हुए बेटे का अंतिम संस्कार (मुखाग्नि) बहू से करवाया और बहू के भाई को बुलाकर उसकी दूसरी शादी करने का आदेश दिया। उनका जीवन और मृत्यु दोनों ही आदर्श संन्यासियों जैसी थी।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. खेतीबाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

बालगोबिन भगत खेतीबाड़ी करने वाले और परिवार वाले गृहस्थ थे, फिर भी निम्नलिखित विशेषताओं के कारण उन्हें साधु माना जाता था:

1. वे कबीर के आदर्शों पर चलते थे और उन्हीं के पदों को गाते थे।

2. वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और हमेशा खरा (सच्चा) व्यवहार करते थे।

3. वे बिना पूछे किसी की चीज़ को नहीं छूते थे और न ही व्यवहार में लाते थे।

4. उनमें लालच नहीं था। खेत की सारी पैदावार कबीर मठ में ले जाकर चढ़ा देते थे और प्रसाद रूप में जो मिलता, उसी से गुज़ारा करते थे।

5. वे मोह-माया से पूरी तरह मुक्त थे, जो एक सच्चे साधु की पहचान है।

प्रश्न 2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

बालगोबिन भगत की पुत्रवधू (बहू) उन्हें अकेले छोड़कर अपने मायके नहीं जाना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि भगत जी बूढ़े हो गए हैं। उनके इकलौते बेटे (यानी उसके पति) की मृत्यु के बाद घर में और कोई सहारा नहीं था। अगर वह चली जाती, तो भगत जी के लिए बुढ़ापे में भोजन कौन बनाता? उनके बीमार पड़ने पर उन्हें चुल्लू भर पानी कौन देता? वह एक सेवाभाव वाली संस्कारी बहू थी और अपने ससुर की सेवा करके अपना जीवन बिताना चाहती थी।

प्रश्न 3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर आम लोगों की तरह रोना-धोना या विलाप नहीं किया। उन्होंने बेटे के शव को सफेद कपड़े से ढँक दिया और उसके चारों ओर फूल और तुलसी के पत्ते बिखेर दिए। शव के पास एक दीपक जलाकर वे उसके सिरहाने बैठकर कबीर के पदों को पूरी तल्लीनता और मधुर आवाज़ में गाने लगे। अपनी रोती हुई बहू को समझाते हुए उन्होंने कहा कि यह रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का समय है, क्योंकि 'आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया है'। एक विरहिणी आत्मा अपने प्रियतम (ईश्वर) से जा मिली है।

प्रश्न 4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

व्यक्तित्व: बालगोबिन भगत साठ वर्ष से ऊपर के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनके बाल सफेद हो गए थे। उनका स्वभाव अत्यंत सीधा, सच्चा और साधुओं जैसा था। वे कबीर के पक्के अनुयायी थे।

वेशभूषा: वे बहुत कम कपड़े पहनते थे। कमर में केवल एक लंगोटी पहनते थे और सिर पर कबीरपंथियों जैसी एक कनफटी टोपी (कान तक ढँकी टोपी) लगाते थे। सर्दियों में वे ऊपर से केवल एक काली कमली (कंबल) ओढ़ लेते थे। उनके माथे पर हमेशा एक रामानंदी चंदन का टीका लगा रहता था और गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल (मोटी) माला पड़ी रहती थी।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के लिए अचरज (हैरानी) का कारण इसलिए थी क्योंकि उनका नियम और नेम-धर्म अत्यंत कठोर था। चाहे कितनी भी कड़ाके की सर्दी हो, वे सुबह बहुत जल्दी उठकर गाँव से दो मील दूर नदी में स्नान करने जाते थे। वहाँ से लौटकर गाँव के बाहर एक ऊँचे स्थान पर बैठकर कबीर के पद गाते थे। उनके इस नियम में मौसम की कोई भी मार कभी बाधा नहीं डाल पाई। बुढ़ापे में भी उनका ऐसा अटूट नियम और कबीर के प्रति इतनी गहरी श्रद्धा देखकर लोग हैरान रह जाते थे।

प्रश्न 6. **पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।**

बालगोबिन भगत के गायन में एक विशेष जादू था। उनकी आवाज़ अत्यंत मधुर और ऊँची थी। आषाढ़ के महीने में जब गाँव वाले खेतों में धान रोप रहे होते, तब भगत जी के कंठ से निकला हुआ एक-एक शब्द स्वर्ग की ओर चढ़ता हुआ महसूस होता था। उनका गाना सुनकर खेलते हुए बच्चे झूम उठते थे, औरतों के होंठ गुनगुनाने लगते थे, और खेत जोतने वाले किसानों के पैर ताल से उठने लगते थे। सर्दियों की ठंडी रातों में भी उनके गायन की गर्मी से उनके माथे पर पसीना चमक उठता था।

प्रश्न 7. **कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।**

बालगोबिन भगत ने समाज की कई पुरानी और रूढ़िवादी मान्यताओं को तोड़ा था:

1. **पुत्र की मृत्यु पर रोने के बजाय उत्सव मनाना:** जहाँ लोग मृत्यु पर विलाप करते हैं, वहीं भगत जी ने इसे आत्मा और परमात्मा का मिलन मानकर गीत गाए।

2. **पुत्रवधू से मुखाग्नि दिलवाना:** हिंदू समाज की पुरानी मान्यता है कि चिता को आग कोई पुरुष ही देता है। परन्तु भगत जी ने बिना किसी परवाह के अपने बेटे की चिता को आग अपनी बहू से ही दिलवाई।

3. **विधवा विवाह का समर्थन:** श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही उन्होंने अपनी बहू के भाई को बुलाकर बहू का दूसरा विवाह कर देने का सख्त आदेश दिया, जबकि उस समय विधवा विवाह को समाज में मान्यता नहीं थी।

Scholrit